Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

उत्तरी राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले के मेघवाल समाज के बच्चों के आभूषण और उनकी मान्यताएं

डॉ. डोली मोगरा* मंजुला**

*** सहायक आचार्य (फैशन टेक्नोलॉजी एण्ड डिजाइनिंग) मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत**
**** शोधार्थी (गृह विज्ञान) मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत**

शोध सारांश – प्रस्तुत शोध पत्र में मेघवाल समाज के बच्चों द्वारा पहने जाने वाले गहने एवं उनसे संबंधित विभिन्न रीति–रिवाज और मान्यताओं संबंधी अध्ययन किया गया है। साथ ही शोध पत्र में मेघवाल जाति के इतिहास और इनसे जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में राजस्थान राज्य के उत्तरी जिला हनुमानगढ़ जिले का उपखंड भादरा को केंद्र में रख कर अध्ययन किया गया है।प्रस्तुत शोध पत्र में आंकड़ों का संग्रहण पर्यवेक्षण विधि और एक अनुसूची के माध्यम से किया गया है।

शब्द कुंजी – मेघवाल, आभूषण, गहने, रीति–रिवाज, परिधान आदि।

प्रस्तावना – आज वर्तमान में अनुसूचित जाति के अंतर्गत आने वाली मेघवाल जाति का इतिहास बड़ा ही समृद्ध रहा है। इस जाति के अधिकत्तर लोग सिंधु नदी के बहाव क्षेत्र में निवासित होने के प्रमाण मिलते हैं। जिसकी बदौलत वर्तमान में यह जाति भारत के उत्तरी–पश्चिमी राज्यों के साथ–साथ पाकिस्तान में पाई जाती है। मेघवालजाति के पर्याय के रूप में अन्य नाम जैसे कि मेघ, मेघवार,मेघवंश आदि नाम से संबोधित किया जाता है।

साहित्य समीक्षा–प्रस्तुत शोध पत्र तैयार करने में प्राथमिक आंकड़ों के अलावा द्वितीयक आंकड़ों के उपयोग हेतु निम्नलिखित पुस्तकों का अध्ययन किया गया है–

मेघवाल कीर्ति (आचार्य गुरुप्रसाद), मेघवाल समाज का गौरवशाली इतिहास (एम. एल. परिहार), मेघवंश इतिहास और संस्कृति भाग 01, 02, 03 (ताराराम), मेघवंश इतिहास (स्वामी गोकुलदास), मद्र और मेघों का प्राचीन व आधुनिक इतिहास (डॉ. नवल वियोगी) आदि अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया गया है।

समाज और संस्कृति–मेघवाल जाति के वंशजअपने आप को मेघ ऋषि की संतान मानते हैं, जो कि बारिश के देवता के रूप में माने जाते हैं। लेकिन वर्तमान में कुछ विद्धान इस जाति का संबंध इन ऋषियों से होना नकारते हैं, जिसमें एम.एल. परिहार (मेघवाल समाज का गौरवशाली इतिहास) प्रमुख है। लेकिन उक्त बातों की सत्यता और असत्यता का तो पता नहीं लेकिन यह जरूर कहा जा सकता है कि इस जाति का हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगा और अन्य इसी प्रकार की सिंधु घाटी सभ्यताओं से इसका संबंध जरूर रहा था। मेघवाल जाति व्यवसाय के रूप में अपने को बुनाई और कृषि कार्य से जोड़ती है। जिसमें एक व्यवसाय (बुनाई) अपनी कौशलता का परिचय देता है, वहीं दूसरा कार्य (कृषि)इनकी कर्मठता का परिचय देता है। इतिहास में इस जाति द्वारा चमड़े से जुड़े कार्य भी किए जाने के वक्तव्य मिलते हैं जो कि उस समय का मुख्य आधार था। समाज की महिलाएं अपनी कढ़ाई–बुनाई में वइस तरह के अन्य कौशलतापूर्ण कार्य में आज भी संलग्न रहती है।

मेघवाल समाज की संस्कृति भी काफी समृद्ध है। इस समाज में भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में पारंपरिक वेशभूषा भिन्न–भिन्न है, क्योंकि इसका प्रभाव क्षेत्र विशेष के आधार पर पड़ना स्वाभाविक है। इस जाति की महिलाएं (अध्ययन क्षेत्र) वर्तमान में सलवार–कुर्ते को पहनना पसंद करती है, लेकिन पारंपरिक परिधान के रूप में ये लहंगा–कुर्ता (लहंगे को घाघरा और कुर्ते को जंफर कहा जाता है) पहनती है। आज वर्तमान में पारंपरिक परिधान के रूप में पहने जाने वाले लहंगे–कुर्ते का प्रचलन आधुनिकता के प्रभाव के कारण कम हो गया है।

पुरुषों में जहां प्रौढ़ पैंट–शर्ट और कमीज (लंबा)–पयजामा पहनने का प्रचलन है, वही वृद्ध पुरुष चद्दर (जिसे तहमद भी कहा जाता है) के साथ कमीज और धोती–कुर्ता पहनना अधिक पसंद करते हैं।तहमद–कमीज और धोती–कुर्ता इस जाति के पुरुषों का पारंपरिक परिधान माना जाता है।

आभूषण/गहने– मानव ने जब से सभ्य जीवन जीना सीखा तब से आभूषणों के उपयोग को अपने जीवन में सँजोया है चाहे वे आभूषण पेड़–पौधों की पत्तियां, फूल, पत्थर और मनके मोती आदि कुछ भी रहे हो।आभूषण एक व्यक्ति की समृद्धि और सुंदरता बढ़ाने के साधन है। ऐसा ही इस जाति में भी आभूषणों का प्रयोग किया जाता है।इस जाति में पूर्व में पुरुषों द्वारा आभूषणों का प्रयोग होता था लेकिन वर्तमान में पुरुषों में इनका प्रयोग कम हो गया है।इस जाति की महिलाओं में इनका प्रचलन आज भी पुरुषों की तुलना में काफी समृद्ध है।साथ ही इस समाज में बच्चों को आभूषण पहनाने का प्रचलन आज भी है, जो कि उनके जन्म के बाद से ही शुरू हो जाता है।

प्रसाधन में प्रथम सौंदर्य साधन के रूप में बच्चों (आँख में) को काजल लगाना है। साथ ही इस काजल का एक टीका उसके माथे के ऊपर एक तरफ नजर से बचने के लिए लगाया जाता है। यह काजल का टीका बच्चों के पैरों के तलवे पर भी लगाया जाता है।

काजल के अलावा इस जाति में बच्चों को पहनाएं जाने वाले आभूषण/गहने विशेषकर गले के आभूषण, हाथों–पैरों और कमर के आभूषण है। इस

क्षेत्र में इस समाज में कानों के आभूषणों का प्रचलन लड़कों में बिल्कुल नहीं है और ना लड़कों के कान आदि को छेदन किया जाता है। बल्कि लड़कियों के कान और नाक में छेड़ने की रिवाज है जिसमें वे क्रमश: छोटी बालियाँ और कोका पहनती है। यहाँ बच्चों संबंधित कान-नाक के अलावा आभूषणों के प्रचलन का विस्तार से अध्ययन किया जा रहा है।

तगड़ी- यह कमर का आभूषण है जो कमर के चारों ओर एक काले धागे में चांदी के घुंघरू पिरोकर बनाया जाता है।

कड़ले (कड़िया)- इस समाज में बच्चों के हाथों एवं पैरो में पहने जाने वाले कड़े होते हैं, जो विशेष कर चांदी के होते हैं।कड़लों में छोटे घुंघरू आदि भी लगे होतेहैं।

निजरिया- इस जाति में बच्चों के पैरों में काले धागे में काले मनके पिरोकर कर बांधे जाते हैं।कई बार इन कालेमनकों के साथ चांदी के घुंघरू भी पिरोये हुए होते हैं।

फूलड़ा- यह आभूषण बच्चों हेतु विशेष होता है, जो कि गले का आभूषण होता है।फूलड़ा एक धागा होता है जिसमें अनेक सांकेतिक चांदी के लॉकेट पिरोये हुए होते हैं। इसका वर्णन अलग-अलग निम्न प्रकार से किया जा रहा है-

चांद- यह है चांद के आकार का सांकेतिक लॉकेट होता है। जो चंद्रमा भगवान को समर्पित होता है।

सूरज-यह सूर्य भगवान को समर्पित लॉकेट होता है, जो कि गोलाकार बना होता है।

मावड़िया-यह लॉकेट मावड़िया या मावड़ीधिरानी(एक देवी जिसकी स्थानीय लोग पूजा करते है) को समर्पित होता है, जिस पर मावड़िया का चित्र उन्केरित होता है।

बाबा रामदेव को समर्पित लॉकेट- यह समाज अपने ईस्ट के रूप में लोक देव बाबा राम देव जी को मानते हैं, इसलिए ये अपने ईस्ट को समर्पित एक लॉकेट बच्चों के गले में बांधते हैं जिन पर पैरों के चिन्ह (पगल्या)उन्केरित होते हैं।

गोसाई जीको समर्पित लॉकेट-उक्त के अलावा भी इस समाज के फूलडे आभूषण में गोसाई जी को समर्पित एक लॉकेट भी होता है।

साथ ही इन पाँच के अलावा इसमें एक डोरा(पुजारी द्धारा मंत्रित) भी कपड़े में लपेट कर बांधा जाता है। आजकल चांद, सूरज,मावड़िया, बाबा रामदेव जी और गोसाई जी के लॉकेट के अलावा कांटा भीफूलड़े का एक भाग होता है। इसके अलावा इस समाज में एक कच्चे सूत से बना धागा (जिसे तांती कहा जाता है)जो रामदेव जी को समर्पित बांधने का भी प्रचलन देखा जा सकता है।

इस प्रकार से स्पष्ट है कि इस समाज में बच्चों को पहनाए जाने वाले गहने बच्चे के सौन्दर्य प्रसाधन के साथ-साथ धार्मिक आस्था के भाव से पहनाए जाते हैं। जिससे स्पष्ट होता है कि ये सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान के धनी है और लोक देवी देवता और प्रकृति के उपासक है, क्योंकि इनके चाँद और सूरज के प्रति आस्था बचपन से ही होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. स्वामी गोकुलदास (1998) मेघवंश इतिहास, अजमेर: श्री सरस्वती प्रकाशन।
2. ताराराम (2011) मेघवंश इतिहास और संस्कृति भाग 1, 2 और 3. नई दिल्ली: सम्यक प्रकाशन।
3. परिहार,एम. एल. (2013)मेघवाल समाज का गौरवशाली इतिहास, जयपुर: बुद्ध पब्लिशर्स।
4. सिंह,आर. पी. (2014)मेघ वंश एक सिंहावलोकन, नई दिल्ली: रवि प्रकाशन।
5. औझा, डी.डी. (2018) जल प्रबंधन, जयपुर : सुरभि पब्लिकेशन।
6. वियोगी, नवल (2019)मद्र व मेघों का प्राचीन व आधुनिक इतिहास, नई दिल्ली: सम्यक प्रकाशन।

****